1.

UNDERSTANDING

= DISCIPLINES AND SUBJECTS =

Unit-I

Meaning of Academic Discipline -

एकादमिक शास्त्रकेन्द्रित पाठ्यक्रम का अभिप्राय: — किसी भी विद्यालय

एकादमिक तथा कॉलेज के चलाने में पाठ्यक्रम का स्थान
विशेष रूप से देखा गया है। पाठ्यक्रम से ही शिक्षा के
लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। पाठ्यक्रम शब्द की उत्पत्ति
लैटिन भाषा के शब्द 'क्यूररे' (Currere) से हुई, जिसका शाब्दिक
अर्थ है - 'दौड़ का मैदान' (Race course) अर्थात व्यक्ति या बालक
के द्वारा अपने ध्येय (aim) की प्राप्ति हेतु दौड़ लगायी जाती है।

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ -

* क्रो एवं क्रो के अनुसार - "पाठ्यक्रम को सीखने वाले या बालक के वे सभी अनुभव शामिल है, जिन्हें वह विद्यालय या उसके बाहर प्राप्त करता है। वे समस्त अनुभव एक कार्यक्रम में शामिल किये जाते है, जो उनको मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, आध्यात्मिक नैतिक रूप से विकास होने में सहायता देता है।"

* एनन के अनुसार - "पाठ्यक्रम पर्यावरण में होनी वाली क्रियाओं का योग है।"

"The curriculum is the Sum total of the activities that go in the environment"

— Anon

* मुनरो के अनुसार — "पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव शामिल है जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।

Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of Education."

— Munro

विशेषताएँ —

1. अनुभवों की पूर्णता —

पाठ्यक्रम उन अनुभवों की पूर्णता है जो विद्यार्थी स्कूल में और स्कूल के बाहर प्राप्त करता है। ये अनुभव उसे व्यक्तित्व के विकास मे सहायक सिद्ध होते है। "पाठ्यक्रम में केवल सिलेबस और पुस्तकें ही शामिल नही होती, बल्कि वे सभी अनुभव एंव संबंध शामिल होते है जिन्हें विद्यार्थी स्कूल के अन्दर और बाहर प्राप्त करता है।

2. जीवन प्रक्रिया :- पाठ्यक्रम जीवन की प्रक्रिया है। जीवन में व्यक्ति एंव पर्यावरण में अन्तक्रिया चलती रहती है। पाठ्यक्रम का संबंध व्यक्ति के साथ भी होता है और उसके पर्यावरण के साथ भी

3. गतिशील :- अच्छा पाठ्यक्रम गतिशील होता है। जैसे-2 समय गुजरता है विद्यार्थियों की रूचियाँ एंव आवश्यकतायें बदलती रहती है। पाठ्यक्रम कभी भी स्थिर नही होता। इसे विभिन्न विद्यार्थियो विभिन्न कक्षाओं तथा विभिन्न स्कूलों के लिए अलग-2 होना चाहिए।

4. जीवन-दर्शन का दर्पण (mirror of Philosophy of life) — पाठ्यक्रम जीवन दर्शन का भी दर्पण है। यह जीवन-दर्शन को व्यक्त करता है प्रत्येक जीवन शैली का अलग जीवन दर्शन होता है और उसी के अनुरूप शिक्षा के उद्देश्य निश्चित किये जाते है। क्योंकि पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों को पुरा किया जाता है।

3.

5. लक्ष्यों की प्राप्ति – पाठ्यक्रम का निर्माण इसलिए किया जाता है कि हमारे कुछ लक्ष्य या उद्देश्य होते है उनको पूरा करना है उसके लिए हम पाठ्यक्रम का निर्माण करते है

6. सम्पूर्ण स्कूल पर्यावरण :– पाठ्यक्रम का सबंध स्कूल के सम्पूर्ण पर्यावरण के साथ होता है। इसमें उस हर चीज को शामिल किया जाता है जो विद्यार्थी के चारों ओर रहती है। इसे 'गतिमान पर्यावरण (The environment in motion) भी कहा जा सकता है।

* NATURE OF ACADEMIC DISCIPLINE (एकादमिक शास्त्रकेन्द्रित पाठ्यक्रम की प्रकृति)

इस पाठ्यक्रम की प्रकृति एक प्रक्रिया है इसको किसी न किसी उद्देश्य के लिए बनाया जाता है यह एक निरन्तर प्रक्रिया है जो सदैव चलती रही है इसमें हम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। यह हमारे सभी उद्देश्यों को प्राप्त की जाती है। इसकी प्रगतिशील प्रक्रिया है जिसको हम गतिशील प्रक्रिया भी कहते है।

4.

निष्कर्ष

Q(2.) TEACHER (अध्यापक) – अध्यापक को शिक्षा पद्धति का केन्द्र-बिन्दु माना जाता है।

"The teacher is the real maker of history" – H.G. Wells

इतिहास का वास्तविक निर्माता अध्यापक होता है।

*प्रो: हुमायूँ कबीर के अनुसार – "अच्छे अध्यापकों के बिना शिक्षा की सबसे अच्छी पद्धति भी सफल नहीं हो सकती। अच्छे अध्यापकों से शिक्षा पद्धति के दोषों को भी दूर किया जा सकता है"

"According to Humayun Kabir, "without gud teachers, even the best of system is bound to fail. with gud teachers, even the defects of a system can be largely overcome."

इसलिए ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जिनमें अच्छे गुण हो

अध्यापक का काम केवल सूचना देना नहीं। उसे समाज को सुधारने का काम भी करना होता है।

कबीर ने तो गुरु को तो ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया है

कबीर ने कहा है –

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोबिन्द दिए मिलाय।

5. इसमें कबीर जी कहते हैं कि मुझे भगवान की प्राप्ति गुरु के द्वारा ही हुई है।

"Teacher, and God, both are standing before me.
अध्यापक और भगवान दोनो मेरे सामने खड़े हैं।
Whom Should I Pay obeisance (झुककर)
मैं दोनों में से किसको सलाम करू
I (bow) झुकाना to you, my teacher,
मेरे अध्यापक मैं तुम्हारे आगे सिर झुकाती हूँ
who guded me to God."
जिसने मुझे भगवान तक जाने का रास्ता बताया

परिभाषाएँ (DEFINITIONS)-

I. रवीन्द्रनाथ टैगोर- "अध्यापक उस दीपक के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश प्रदान करता है।"

"A Teacher can never truly teach unless he is still learning himself. A lamb can never light another lamb unless it contin ues to burn its own flame."

* सर जॉन एडम्स- "अध्यापक ही मनुष्य का असली निर्माता है।"

निष्कर्ष- रूप में कहा जा सकता है कि शैक्षिक प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर सुचारू रूप से चलाने का कार्य अध्यापक का ही है। अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का वह शक्तिशाली तत्व है जो समाज और राष्ट्र का सच्चे अर्थों में निर्माता कहलाता है।

QUALITIES OF AN IDEAL TEACHER (अध्यापक के गुण)

एक आदर्श अध्यापक मे निम्नलिखित गुण होने चाहिए —

(1) व्यक्तित्व संबंधी गुण (Personality Related Qualities)

1. सकारात्मक दृष्टिकोण — अध्यापक का दृष्टिकोण विद्यार्थी की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। यदि वह अपने विषय के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है तो वह अपने विद्यार्थियों के समक्ष अपने विषय को रुचिकर बनाता है।

2. छात्रों के प्रति स्नेह भाव — अध्यापक को अपने छात्रों के प्रति स्नेह भाव रखना चाहिए। अध्यापक का प्यार ही विद्यार्थियों को स्नेह भाव के लिए प्रेरित कर सकता है

3. सीधा-साधा व्यक्तित्व — एक कहावत है — "सादा जीवन उच्च विचार।" अध्यापक के लिए यह कहावत सही लगती है — उसे किसी प्रकार के लोभ-लालच में न पड़कर सीधा-साधा और सार्थक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

(ACADEMIC QUALITIES) शैक्षिक गुण

(1) आवाज की स्पष्टता (Clarity in voice) :— अध्यापक की प्रभावी कार्य कुशलता उसके आवाज की स्पष्टता पर भी निर्भर करती है। जो अध्यापक अपनी स्पष्ट और आसान भावों को अभिव्यक्त करते है वे अपने कार्य को आसानी से पूर्ण कर लेते है। विद्यार्थी भी उन्हीं अध्यापकों को पसंद करते है जो अपनी विषय वस्तु को स्पष्ट शब्दों में उल्लेखित करते है।

2. काल्पनिक क्षमता — एक अच्छा अध्यापक अपने विद्यार्थियों को नए-नए

प्रयोग करके लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित करता रहता है। उसे प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर उनकी बौद्धिक और शैक्षिक योग्यता के अनुसार शिक्षण क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए।

(ग) (PROFESSIONAL QUALITIES) व्यावसायिक गुण

I. प्रगतिशील दृष्टिकोण - अध्यापक को अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण से मुक्त होना चाहिए। उसमें अपने सोचे गए विचारों को लक्ष्य तक पहुंचाने की क्षमता होनी चाहिए। उसे नए-नए विचारों को प्रयोग करके विद्यार्थियों तक पहुंचाना चाहिए। रचनात्मकता का गुण भी अध्यापक के प्रगतिशील दृष्टिकोण का ही परिचायक है।

2. छात्रों के प्रति सम्मान भाव - एक अच्छे अध्यापक को छात्रों के विचारों को उचित महत्व देना चाहिए। उसे छात्रों को सकारात्मक भाव व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को उचित मान देना चाहिए।

3. क्रियात्मक क्षमता (Functional Capacity) - प्रत्येक अध्यापक की कुशलता और अकुशलता उसकी क्रियात्मकता पर निर्भर करती है जो अध्यापक जितना क्रियाशील होगा उसका शैक्षिक प्रभाव उतना ही अधिक होगा। एक अध्यापक को बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

- उत्साही और परिश्रमी (Enthusiastic and Industriousness) - अध्यापक को अत्यन्त उत्साही और परिश्रमी होना चाहिए। एक अध्यापक का उत्साह ही उसके लक्ष्यों की ओर निरन्तर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यदि अध्यापक में इन गुणों का अभाव है तो वह अपने विद्यार्थियों में इस प्रकार के गुण विकसित नहीं कर सकेगा

3. SOCIAL QUALITIES सामाजिक गुण

1. मिलनसार व्यक्ति - एक अच्छे अध्यापक को मिलनसार प्रकृति का होना चाहिए। उसे अपने समाज और विद्यालय में एक-दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने चाहिएं। उसे समाज और विद्यालय के विभिन्न कार्यों में योगदान देना चाहिए।

2. नेतृत्व क्षमता - अध्यापक की प्रभावशीलता को सिद्ध करने के लिए उसमें नेतृत्व के गुणों का होना नितान्त आवश्यक है। अध्यापक के अन्दर नेतृत्व का ऐसा गुण होना चाहिए जो उसे अपनी क्षमता चरित्र और आदर्श चरित्र वाला अध्यापक ही कुशल नेतृत्व कर सकता है।

3. निष्पक्ष चरित्र -
अध्यापक को निष्पक्ष चरित्र का धनी होना चाहिए। उसे किसी प्रकार के विवाद या घटना में किसी पात्र या पात्रों का पक्ष नहीं लेना चाहिए।

DUTIES AND FUNCTIONS OF A TEACHER (कार्य)

1. विषय वस्तु की पूर्ण जानकारी रखना।
2. विद्यार्थियों को लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित करना
3. नवीन और रुचिकर शिक्षण विधियों का चयन करना
4. विद्यार्थियों से प्रश्न पूछना और उनके प्रश्नों के उत्तर देना
5. पाठ की जानकारी हेतु पाठ की पुनरावृत्ती करना
6. गृह कार्य देना व उसमें संशोधन करना।

Duties and Functions of a teacher (अध्यापक के दायित्व और कार्य)

1. शैक्षिक दायित्व (Teaching Duties)
2. योजनात्मक दायित्व (Planning Duties)
3. प्रबन्धनात्मक दायित्व (managing Duties)
4. संगठनात्मक दायित्व (organising Duties)
5. निर्देशात्मक दायित्व (Guiding Duties)
6. निरीक्षणात्मक दायित्व (Supervising Duties)
7. अभिलेखात्मक दायित्व (Recording Duties)

TEACHER'S RELATION WITH OTHERS (अध्यापक के अन्यों के साथ संबंध)

अध्यापक को विद्यालय प्रक्रिया का सूत्रधार माना जाता है। विद्यालय की समूची क्रियायें अध्यापक की अनु उपस्थिति में ही पूर्ण होती हैं। विद्यालय क्रियाओं के कार्यक्रम में कभी उसे विद्यार्थियों के साथ होना पड़ता है तो कभी अपने सहकर्मियों के साथ। विद्यालय में अध्यापक के संबंध अपने सहकर्मियों के साथ मित्रतापूर्ण होने चाहिए विद्यालय में अध्यापक के संबंध निम्न के साथ माने जाते हैं —

1. विद्यार्थियों के साथ संबंध (Relation with Students)
2. सहकर्मियों के साथ संबंध (Relation with ~~managing~~ Collegeagues)
3. अभिभावकों के साथ सम्बन्ध (Relation with Parents)
4. समुदाय के साथ सम्बन्ध (Relation with Community)

निष्कर्ष —

Q-3. CONCEPT AND NATURE OF CURRICULUM (प्रत्यय व प्रकृति पाठ्यक्रम)

Meaning of curriculum -

DEFINITIONS of curriculum - इस question के Ans के लिए questions No I को पढ़ ले।

SIGNIFICATION OF the CURRICULUM (पाठ्यक्रम का महत्व)

I. पाठ्यक्रम शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ती करता है
II. पाठ्यक्रम छात्र अथवा अध्यापक के संबंधों को मजबूत करता है
III. पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों को 'जीवन कला' (Art of Living) में प्रशिक्षण के अवसर प्राप्त होते हैं।
IV. पाठ्यक्रम का छात्र के जीवन में बहुत महत्व है जिसके द्वारा अच्छे बालकों का निर्माण किया जा सकता है।

Basis OF Curriculum (पाठ्यक्रम के विभिन्न आधार)

(1) दार्शनिक आधार (Philosophical Basis)
- I. आदर्शवाद
- II. प्रकृतिवाद
- III. प्रयोजनवाद
- IV. यथार्थवाद

सामाजिक आधार (Sociological Basis)

मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Basis)

वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis)

10. पाठ्यक्रम के सुधार के सुझाव -

I प्राथमिक स्तर के बालकों का पाठ्यक्रम बाल - केन्द्रित होना चाहिए

II. पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए।

III. पाठ्यक्रम को बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चाहिए।

IV. पाठ्यक्रम को अवकाश के सदुपयोग की शिक्षा भी देनी चाहिए।

Q-4. (MEANING OF CURRICULUM DEVELOPMENT) (पाठ्यक्रम निर्माण का अर्थ)

पाठ्यक्रम निर्माण हम उसको कह सकते हैं जब शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों तथा बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विभिन्न क्रम के अनुसार योजना बनाई जाती है उसे पाठ्यक्रम निर्माण कहते हैं। पाठ्यक्रम निर्माण का अर्थ बच्चों को जीवन के लिए तैयार करना है। "पाठ्यक्रम निर्माण में विद्यार्थी के वे सभी अनुभव को शामिल किया जाता है जो वह अपने कक्षा के कमरे में, प्रयोगशाला में, पुस्तकालय में, स्कूल में होने वाली अन्य क्रियाओं के द्वारा, खेल के मैदान के एवं अपने अध्यापकों तथा अपने दोस्तों से विचार के आदान - प्रदान के द्वारा प्राप्त करता है।"

STEPS OF CURRICULUM DEVELOPMENT (सोपान)

(a) उद्देश्यों का निर्माण (Formulation of objectives)

(b) पाठ्य-वस्तु और प्रकरणों का चुनाव एवं आयोजन (Selection and organisation of Contents and topic)

11.

(A) उद्देश्यों का निर्माण (Formulatation of objectives) – पाठ्यक्रम को हम इसलिए शुरू करते है ताकि जो हमारे उद्देश्य होते है उनको पुरा किया जा सके। इस प्रकार किसी भी कक्षा अथवा जो उनका स्तर होता है उसी प्रकार पाठ्यक्रम के निर्माण में सबसे पहले उस कक्षा अथवा स्तर पर विषय को पढ़ाने के प्राप्त उद्देश्यों को लिखा जाता है।

(B) पाठ्य-वस्तु और प्रकरणों का चुनाव एवं आयोजन – (जो उद्देश्य हमने प्राप्त कर लिए है उसके पश्चात पाठ्य-वस्तु और प्रकरणों के उचित चुनाव की आवश्यकता होती है।

(पाठ्यक्रम आयोजन के सिद्धांत) (Principles of curriculum org.

I. तार्किकता एवं मनोवैज्ञानिक क्रमबद्धता का सिद्धांत – बच्चों के लिए विषय की उपयोगिता तथा उसके मानसिक विकास एवं रुचियों को ही आयोजन का आधार माना जाता है इसके अनुसार विषय बच्चे के लिए होता है न कि बच्चा विषय के लिए जिस स्तर पर बच्चा जिस विषय को पढ़ने की आवश्यकता अनुभव करता है, वह उसी समय पढ़ाई जाती है।

2. क्रियात्मकता का सिद्धांत :– (Principle of Activity) बालक का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वह कुछ ना कुछ क्रिया करता रहता है। छोटी कक्षाओं के बच्चों का ध्यान खेल-कूद में ज्यादा रहता है। इसका मुख्य कारण हम कह सकते है कि बालक जितना छोटा होगा वह उतना ही क्रियाशील पाया जाता है।

जैसे-2 बच्चा बड़ी कक्षाओं में प्रवेश कर जाता है तो उसकी क्रियात्मक कार्यों में रुचि कम हो जाती है और वह कल्पनाशील कार्यों में रुचि लेने लग जाता है।

3. कठिनाई का सिद्धांत :- पाठ्यक्रम की व्यवस्था विद्यार्थियों की आयु के अनुसार होनी चाहिए। सभी विषयों को इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिए जो बालकों को आसानी से समझ में आ जाएं।

4. समवाय का सिद्धांत :- समवाय सिद्धांत का ध्यान रखते हुए एक ओर तो पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से तथा दूसरी ओर जीवन की क्रियाओं से संबंधित किया जा सकता है

I. विद्यार्थी किस प्रकार के सामाजिक अथवा प्राकृतिक वातावरण में रह रहे हैं ?

II. दैनिक जीवन में विभिन्न विषयों का प्रयोग कहाँ और कैसे किया जाता है।

III. पाठ्यक्रम को थोड़ा लचकदार रखना चाहिए जिससे आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन किया जा सके।

4. मूल्यांकन की उचित विधियाँ एवं तकनीकी सुझाव - शिक्षा की मुख्य तीन प्रक्रिया मानी गई हैं। प्राप्य उद्देश्य, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन। हम अपने कार्य में किस सीमा तक सफल हो रहे हैं इसका ज्ञान मूल्यांकन द्वारा होता है। मूल्यांकन संबंधी सभी आवश्यक शिक्षण सामग्री को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

13. PRINCIPLES OF CURRICULUM DEVELOPMENT (सिद्धांत)

I. संवैधानिक मूल्य - पाठ्यक्रम का प्रयास भारतीय संविधान के मूल्यों के समर्थन, निर्वाह और विस्तार का होना चाहिए, समानता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता, अपने अधिकार के सम्मान, अन्यों के हित को शामिल किया जाना चाहिए।

II. शिक्षार्थी - केन्द्रित: पाठ्यक्रम को बनाते समय ध्यान रखना चाहिए कि इसमें बालक को केन्द्र बिन्दु बनाना चाहिए, पाठ्यक्रम का उद्देश्य बच्चे के ज्ञान की संरचना और सारा जीवन वह अपनी दक्षताओं में अर्जन तथा सुधार कैसे कर सकता है इसको ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

III. मुक्त शिक्षा :- में बच्चों को कक्षा में नहीं जाना पड़ता बच्चों को घर पर ही शिक्षा को उपलब्ध कराया जाता है। इसमें बच्चें शिक्षा के साथ-साथ अपने दुसरे कार्यों को भी कर सकते हैं।

IV. रचनात्मकता का सिद्धांत: (The Principle of Creativity) - शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही बच्चों की योग्यताओं का विकास करना होता है। पाठ्यक्रम में उन कार्यक्रमों को शामिल किया जाना चाहिए जो बच्चों में सृजनात्मकता तथा रचनात्मकता का विकास करना चाहिए।

V. क्रियाशीलता संबंधी सिद्धांत: (The Activity Principle) - क्रियाशीलता को पाठ्यक्रम का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए, क्रियाशील पाठ्यक्रम

14. बच्चे के मानसिक विकास में सहायक माना जाता है।

5. व्यक्तिगत विभिन्नता संबंधी सिद्धांत: (Principle of Individual Difference) पाठ्यक्रम को बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्तिगत विभिन्नताओं को केन्द्र मानकर बनाना चाहिए क्योंकि बच्चो के अनुभव, रूचियाँ, जन्मजात योग्यताएँ तथा यौन संबंधी कई विभिन्नताएँ पाई जाती है।

6. परिपक्वता का सिद्धांत (Principle of maturity) - पाठ्यक्रम बनाते समय बच्चे के मानसिक विकास को ध्यान में रखना चाहिएं। पाठ्यक्रम में खोज संबंधी विषयों को शामिल किया जाना चाहिएं।

PEDAGOGIC SUBJECTS (शैक्षणिक विषय)

I: मनोविज्ञान तत्व (Psychological Factors)

ii सामाजिक तत्व (Social Factors)

iii प्राकृतिक विज्ञान (

iv. औपचारिक विज्ञान (

I- Psychological Factors:- आधुनिक काल में बहुत अलग तरीके से पाठ्यक्रम को बनाया जाता है। पाठ्यक्रम का निर्माण नवीन विधियों द्वारा किया जाता है जो शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता देती है।

II- सामाजिक तत्व - पाठ्यक्रम निर्माण में समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना समाज के प्रभाव के व्यक्ति द्वारा कुछ सीखा नहीं जा सकता है, क्योंकि बालकों को शुरू से अन्त तक समाज में ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

15.

वैज्ञानिक तत्व (Scientific Factors) – वर्तमान समय में विज्ञान ने बहुत उन्नति की है, आज के समय मे जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जिस पर विज्ञान का प्रभाव न पड़ा हो। हरबर्ट स्पेन्सर – शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवन के लिए तैयारी मानते हैं।

निष्कर्ष – पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से कई आधारों के द्वारा वर्गीकृत किया गया है

PHILOSOPHICAL BASES OF CURRICULUM (पाठ्यक्रम के दार्शनिक आधार

Philosophy of Education :– मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है। बौद्धिक प्राणी के रूप में अपने जीवन का अस्तित्व बनाए रखने और उसे निरन्तर प्रगति के मार्ग में अग्रसर रखने हेतु व संस्कृति एवं सभ्यता के आदिकाल से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व उसके निर्माता और अपने स्वयं के जीवन के स्वरूप समस्या रहस्यों एवं तथ्यों पर अनवरत चिंतन करता रहता है। और चिंतन के परिणामस्वरूप इनके सम्बन्ध में उसे जो तथ्य निष्कर्ष, विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुए उन्हें क्रियान्वित रूप देता रहा है। मानव के प्रयासों के परिणामस्वरूप ही दर्शन

Philosophy एवं शिक्षा (Education) का उदय हुआ 'दर्शन' का अर्थ अमूर्त चिंतन करने के उस प्रयास से है जिसके द्वारा आत्मा, ईश्वर, प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन का रहस्य उद्घाटन किया जाता है।

हैंडरसन के अनुसार – 'दर्शन' सबसे जटिल समस्याओं का कठिन अनुशासित तथा सावधानीपूर्ण किया हुआ विश्लेषण है जिसका मानव ने कभी अनुभव किया है।

16. पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Basis of Curriculum)

मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यही है कि शिक्षा की उन सभी क्रियाओं से संबन्धित है जो विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक होते है शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों की प्रतिभा को जागृत करके उसके व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है पाठ्यक्रम को बनाते समय मनोविज्ञान को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम के विकास में मनोविज्ञान का महत्व हो सकता है, इसको हम निम्नलिखित तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

(क.) सर्वांगीण विकास का तथ्य - किसी भी शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास होता है, बालक के सर्वांगीण विकास के पक्ष को मजबूती देने के लिए बच्चे के ज्ञानात्मक क्रियात्मक तथा भावनात्मक पक्षों को विकसित करना पड़ता है।

(ख) वांछित परिवर्तन का तथ्य :- किसी भी पाठ्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन करना होता है, और बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए हमें मनोविज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। मनोविज्ञान से ही हमें उसमें होने वाले परिवर्तनों का पता चलता है।

(ग.) बाल - केन्द्रियता का तथ्य - पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करके भावी जीवन हेतु तैयार करना है। हमें बालक की रुचियों, क्षमताओं और आवश्यकताओं को अनदेखा नहीं करना चाहिए।

17.

* नवीन ज्ञान की खोज का तथ्य :- मनोविज्ञान की धारणा के अनुसार यदि विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया स्वच्छन्द वातावरण में होती है उन्हें स्वंय सीखने हेतु प्रेरित किया जाता है तो नवीन ज्ञान की खोज करने में सफल होते हैं

(SOCIOLOGICAL BASIS OF CURRICULUM) (सामाजिक आधार)

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को भावी जीवन को सफल बनाने के लिए तैयार करना होता है। कोई भी शैक्षिक प्रक्रिया तब तक उपयोगी एंव प्रभावी नहीं मानी जा सकती जब तक समाज की जरूरतों को पूरा नहीं करती समाज और शिक्षा का आपस में गहरा संबंध है

समाजशास्त्र के अनुसार पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य :-

* नवीन ज्ञान को विकसित करना।
* युवाओं का सामाजिक नियन्त्रण
* सामाजिक विकास की गति को बनाए रखना।
* विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि समाज और राष्ट्र के विकास हेतु सामाजिक परिवर्तनों को जानकर उचित सामंजस्य स्थापित कर सके।

Educational PerSpective
शैक्षिक आधार

1. मूल पाठ्यक्रम
2. क्रिया आधारित पाठ्यक्रम
3. विषय आधारित पाठ्यक्रम
4. शिल्प कला आधारित पाठ्यक्रम
5. बाल आधारित पाठ्यक्रम

CRITERIA FOR CONTENT SELECTION OR UNDERSTANDING

विषयवस्तु के चयन के मापदण्ड अथवा समझ

विषय वस्तु और उद्देश्य एक-दूसरे पर निर्भर करते है। विषय वस्तु से अभिप्राय संकल्पनाओं (concepts) तथ्यों का सार अवधारणाओं, सामान्यीकरण (कॉमन) सिद्धांत और सिद्धान्तवादों से है पाठ्यक्रम की विषयवस्तु ऐसी होनी चाहिए कि छात्र ज्ञान प्राप्त करके दैनिक जीवन में उसका उपयोग कर सकें। चयन की गई विषयवस्तु ऐसी होनी चाहिए कि उसमें छात्रों को ज्ञान प्राप्त कर सके वे मानव जीवन की वास्तविकताओं को समझ सके

विषयवस्तु का चयन (SELECTION OF CONTENT)

बच्चा सूक्ष्म स्तर पर मापदण्ड होना चाहिए कि वह छात्रों की आवश्यकताओं के लिए निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप हो।

I आत्म-निर्भरता - यह मापदण्ड छात्रों को अधिक से अधिक आत्मनिर्भर बनाने में अत्यन्त मितव्ययी ढंग से सहायता करता है। विषय वस्तु छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता करता है।

2. महत्व - सीखी जानी वाली विषय वस्तु छात्रों के मूल्य विचारों अवधारणाओं और अधिगम योग्यताओं में महत्व देनी वाली होनी चाहिए।

3. रुचि -

विषयवस्तु छात्रों के मानसिक विकास के अनुरूप

होनी चाहिए।

* उपयोगिता :- का मापदण्ड विषयवस्तु की उपयोगिता से संबंधित है। विषयवस्तु छात्रों के व्यावसायिक परिस्थितियों में सहायक होनी चाहिए।

* वैधता (validity) :- चयन की गई विषयवस्तु उस सीमा तक वैध होनी चाहिए कि वह पाठ्यक्रम के उद्देश्यो और लक्ष्यों से जुड़ी हुई हो। और वह दैनिक जीवन के लिए उपयोगी भी होनी चाहिए।

MULTI-DISCIPLINARY APPROACH (बहु-शास्त्र केन्द्रित उपागम)

पहले पाठ्यक्रम का क्षेत्र विभिन्न विषयों की पाठ्य-वस्तुओं के अध्ययन-अध्यापन तक ही सीमित माना जाता था, विद्यालयों में जो क्रियाएं आयोजित की जाती हैं जैसे - खेल-कूद व्यायाम आदि इन सभी क्रियाओं को पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के नाम से जाना जाता है

I. शारीरिक विकास संबंधी क्रियायें :- इसके अन्तर्गत खेलकूद, तैराकी रोगों से बचने के उपाय, पौष्टिक आहार आदि बातों को समाहित किया जाता है।

* सांस्कृतिक क्रियायें :- इसके अन्तर्गत सकल अभिनय, मूक अभिनय, और मनोरंजनात्मक क्रियायें शामिल की जाती हैं।

* सामाजिक क्रियाये :-

विद्यालयों द्वारा बालकों के माध्यम से

20. सफाई अभियान, स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों का प्रचार इसके अन्तर्गत आता है।

* सृजनात्मक क्रियाएँ — इस वर्ग में बालकों की रचना संबंधी प्रवृत्तियों जैसे - हाथ से चित्र बनाना, जो भी उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना कुछ नवीनता की खोज आदि को शामिल किया जाता है।

TRAN'S-DISCIPLINARY APPROACH (सम्पादित शास्त्रकेन्द्रित उपागम)

इस उपागम में उन प्रवृत्तियों को शामिल किया जाता है जिनका आयोजन विद्यालयों द्वारा बालकों की रुचियों का समुचित विकास करने के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार की प्रवृत्तियों में विभिन्न वस्तुओं जैसे - टिकट, सिक्के, पत्थर आदि का संग्रह करना, वाद-विवाद, पैनल चर्चा, आदि प्रवृत्तियों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत रखा जाता है। खेल पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों (Attitude) के अन्तर्गत आता है। परंतु कुछ राज्यों ने इसे अब एक अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में इसे एक निश्चित स्थान प्रदान किया है, समाज का भी यह प्रयास रहता है कि वह बालकों को जीवन में ठीक प्रकार से समायोजित हो सकने हेतु अच्छी शिक्षा की व्यवस्था कर सके।

निष्कर्ष — इस प्रकार कहा जा सकता है कि छात्र अपने दैनिक जीवन का कुछ भाग विद्यालय के निर्देशन में व्यतीत करते हैं कुछ स्वतन्त्र रूप में। जो समय छात्रों का विद्यालयों में व्यतीत किया जाता है, वही पाठ्यक्रम का भाग कहलाता है।

UNIT - II

Education as Interdisciplinary Knowledge

शास्त्र केन्द्रित अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षा की आलोचनात्मक व्याख्या

Meaning of Education:- शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिद् धातु में अ प्रत्यय लगने से बना है। शिद् का अर्थ है - सीखना और सीखाना, इसलिए शिक्षा का अर्थ है सीखने सिखाने की प्रक्रिया एजूकेशन शब्द लैटिन भाषा के एजूकेटम शब्द से बना है और 'एजूकेटम' शब्द उसी भाषा के ए (E) तथा डयूको (DUCO) दो शब्दों से मिलकर बना है। ए का अर्थ है अन्दर से और डयूको का अर्थ है - आगे बढ़ाना इस लिए हम कह सकते है कि Education का अर्थ बच्चें की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना

परिभाषाएँ

* मनुष्य के भीतर जो पूर्णता है उसको बाहर निकालना ही शिक्षा है

- स्वामी विवेकानन्द

* शिक्षा से अभिप्राय: बालक और मनुष्य के शरीर, मन, और बालक के सर्वांगीण विकास से है।

महात्मा गाँधी

* शिक्षा वह है जो मनुष्य को सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाती है।

चार्वाकों के अनुसार

22.

व्यापक शिक्षा	संकुचित शिक्षा
I. व्यापक अर्थ में शिक्षा मनुष्य के जीवन भर चलती है। इसमें वह शिक्षा भी शामिल होती है। जिसे विद्यालय शिक्षा भी कहते हैं	I. संकुचित अर्थ में शिक्षा मनुष्य के जीवन में एक निश्चित काल में ही चलती है
* इस शिक्षण विधियाँ विभिन्न होती हैं उन सबका वर्णन नहीं किया जा सकता।	* इस शिक्षा हेतु कुछ शिक्षण विधियों का विधान किया जाता है।
* यह शिक्षा किसी भी समय और किसी भी स्थान पर चलती रहती है।	* यह शिक्षा केवल विद्यालयों में ही चलती है।
* यह शिक्षा किन्हीं भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच चलती है।	* यह शिक्षा निश्चित शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच चलती है।

NATURE OF EDUCATION शिक्षा की प्रकृति

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके मुख्य रूप से तीन अंग होते हैं। सिखाने वाला सीखने वाला और सीखने - सीखाना की जो विषय सामग्री और क्रिया, यह बात दूसरी है कि - सिखाना वाला सीखने वालों के सामने उपस्थित रहता है। शिक्षा उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, इसके उद्देश्य समाज द्वारा निश्चित होते हैं इसी प्रकार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। व्यापक अर्थ में शिक्षा की विधियाँ अति व्यापक होती हैं। जो शिक्षा के उद्देश्य को निश्चित करती हैं।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि किसी समाज के धर्म-दर्शन, संरचना संस्कृति, वैज्ञानिक परिवर्तनों के साथ-2 उसकी शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहता है।

23. Need of EDUCATION शिक्षा की आवश्यकता

* मानव के गुणों का संचार करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है बिना शिक्षा के हम मानवीय गुणों का विकास नहीं कर सकते

* राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

* मानसिक विकास करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

* अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

* प्रत्येक प्राणी की आन्तरिक शक्तियों को समझने के लिए

* सामाजिक जीवन व्यतीत करने के लिए भी शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

*

UTILITIES OF EDUCATION (शिक्षा की उपयोगिता)

* शिक्षा के द्वारा बालक की आन्तरिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है।
* शिक्षा द्वारा विभिन्न मूल्यों का विकास होता है।
* शिक्षा मानवीय एवं सामाजिक गुणों के विकास में सहायता करती है।
* शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सही ज्ञान होता है।

24.
* शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता करती है।

Relationships with disciplines subjects such as Philosophy

दर्शन क्या है – दर्शन अंग्रेजी भाषा के 'फिलासफी' (Philosophy) शब्द का रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के दो शब्दों फिलोस (Philos) तथा सोफिया (Sophia) से हुई है। फिलोस का अर्थ है प्रेम और सोफिया का अर्थ है – ज्ञान वास्तव में सत्य की खोज करना ही दर्शन है।

प्लेटो – "जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई-नई बातों को जानने के लिए रुचि प्रकट करता है तथा जो कभी सन्तुष्ट नहीं होता, उसे दार्शनिक कहा जाता है।

हैण्डसन – "दर्शन ऐसी सबसे जटिल समस्याओं का कठिन, अनुशासित तथा सावधानी से किया हुआ विश्लेषण है जिनका मानव ने कभी अनुभव किया हो।

(PHILOSOPHY AND DISCIPLINE) दर्शनशास्त्र तथा अनुशासन

अनुशासन की समस्या पूरे जीवन-दर्शन पर ही आधारित होती है। एक काल या स्थिति में किसी समाज का जैसा जीवन दर्शन होता है। वैसा ही अनुशासन का सिद्धांत उस समाज में अपनाया जाता है।

प्राचीन भारत में जीवन का उद्देश्य धर्म पर आधारित था इसी के प्रभाव के कारण गुरू पूज्य समझा जाता था। उसकी आज्ञा का पालन प्रत्येक विद्यार्थी का धर्म माना जाता था। इसी प्रकार (ग्रीक) में, जहाँ देश की सुरक्षा को जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य समझा जाता था। जैसे प्रकृतिवादी विचारधारा का विकास होने पर अनुशासन का सिद्धात भी बदल गया।

PSYCHOLOGY (मनोविज्ञान)

शिक्षा की वर्तमान अवधारणा के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षक एंव पाठ्यक्रम बनाने वालों को बालक की प्रकृति उसके विकास के विभिन्न स्तरों पर उसकी आवश्यकताओं, क्षमताओं, अनुभवों, एंव रूचियों को ध्यान में रखकर संगठित करना आवश्यक होता है। सामान्य रूप से इन्हीं को पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक आधार की संज्ञा दी जाती है

समाजशास्त्र (SOCIOLOGY)

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की सामाजिक स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव उसके शैक्षिक उद्देश्यों पर पड़ता है। जब शैक्षिक उद्देश्यों का चयन किया जाता है। तो यह ध्यान रखा जाता है कि वे उद्देश्य

समाज के अनुरूप हो तथा समय के अनुसार परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कर सके; कोई भी व्यक्ति जीवन में तभी सफलता प्राप्त कर सकता है, जब वो अधिक से अधिक समाज से सामंजस्य स्थापित कर सके।

के. जी. सैयदेन :- "पाठ्यक्रम मूल रूप में बालक को उस पर्यावरण में समायोजित करने की प्रक्रिया में सहायता के लिए है।

व्यक्ति को दो प्रकार स्थितियों से समायोजन करना होता है भौतिक एवं सामाजिक भौतिक स्थितियों के साथ समायोजित होने के अवसर तो बालकों को शैशवावस्था से ही मिल जाते हैं तथा विद्यालय में प्रवेश के समय तक उनके साथ कुछ सीमा तक समायोजन हो चुका है। विद्यालयों का कार्य बालकों की सामाजिक स्थितियों के साथ समायोजन के बारे में सोचना होता है। इसी प्रकार वर्तमान पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण की समस्या राष्ट्रीय शिक्षा आदि का समावेश किया जा रहा है। हमारे देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही विद्यालयों में प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम के विभिन्न अंगों के माध्यम से सद्भावना की शिक्षा दी जा रही है। पाठ्यक्रम को सार्थक बनाने के लिए सामाजिक स्थिति को अच्छी तरह समझना अति आवश्यक होता है।

अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

विकासशील देशों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से रखें। इसके लिए विकास को ध्यान में रखना अति आवश्यक होता है।

भारतीय योजना आयोग के अनुसार – "आर्थिक नियोजन अनिवार्य रूप से सामाजिक उद्देश्यों के अनुरूप संसाधनों के अधिक लाभ के लिए उपयोग करने का एक मार्ग है।

"नियोजन को अर्थशास्त्र का आवश्यक अंग माना जाता है।

इसमें मुख्यतः दो बातों को आवश्यक माना जाता है
(अ) उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रणाली अपनाना।
(ब) उपलब्ध साधनों तथा उनके अधिकतम जानकारी के संबंध में ज्ञान प्रदान करना

I. देश की गुणात्मकता में सुधार लाना।
* अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना।
3. कृषि संबंधी अनुसंधानों की जांच करना।
4. विकास की नई तकनीकों का व्यापक प्रयोग करना।

मानवशास्त्र (ANTHROPOLOGY)

* मानवशास्त्र का अभिप्राय: मनुष्य के जीवन के समस्त पहलू से लगाया जाता था। व्यक्ति के उत्पत्ति के मूल में रासायनिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। शरीर की संरचना में कार्बन, नाइट्रोजन, आक्सीजन, सल्फर, आदि तत्वों की भुमिका प्रमुख होती है। व्यक्ति की प्रकृति, मानसिक विशेषताओं के अध्ययन में मानवशास्त्र का बहुत बड़ा योग दान है।

प्रबन्धन (MANAGEMENT)

प्रबंध्य से संबंधित अर्थ - उपलब्ध संसाधनों का दक्षतापूर्वक तथा प्रभावपूर्ण तरीके से उपयोग करते हुए लोगों के कार्यों में समन्वय करना ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके। प्रबन्धन के अन्तर्गत आयोजन संगठन निर्माण, नेतृत्व करना आदि आते हैं। संगठन भले ही बड़ा हो या छोटा लाभ के लिए हो अथवा गैर लाभ वाला सेवा प्रदान करता हो। प्रबंध्य सभी के लिए आवश्यक है इसलिए कि व्यक्ति सामूहिक उद्देश्यों की पूर्ती में अपना योगदान दे सके।

विशेषताए -

* प्रबंध्य एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
* प्रबंध्य सर्वव्यापी है।
* प्रबंध्य बहुआयामी है।

21.

* प्रबंध निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
* प्रबंध एक सामूहिक क्रिया है।
* प्रबंध एक गतिशील कार्य है।
* प्रबंध एक अमूर्त शक्ति है।

निष्कर्ष :-

उपयुक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रबंध को संगठन के कार्यों में अनुभव किया जा सकता है।

III Unit | Linkage between Education and other Development Sectors.

* **शिक्षा का व्यवसायीकरण :=** आधुनिक शिक्षा पद्धति की अपनी अलग ही विशेषता है, पर दुर्भाग्य है कि यह केवल जीवन में आर्थिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गई सामाजिक समृद्धि का इसमें समावेश है पर इसका उपयोग कैसे किया जाये यह इसकी अनभिज्ञता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समग्रता का पूर्णतया अभाव है। हम शिक्षा ग्रहण कर एक अच्छी सोच का निर्माण कर सकते है! जिससे जीवन का विकास हो पर यह तभी संभव है जब हमें इसकी सही एवं स्पष्ट जानकारी हो शिक्षा में एक अध्यापक की जिम्मेदारी बहुत ही मायने रखती है। छात्र अपने कर्तव्य के प्रति कितना सजग एवं सर्तक है ताकि उसका विकास हो सके। आज की शिक्षा एकांगी हो गई है। इसका प्रमुख कारण है शिक्षा का व्यावसायीकरण आज शिक्षा सिर्फ एक व्यवसाय का माध्यम बनकर रह गया है। शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास की व्याख्या करती है। यह विकास की परिभाषा को स्पष्ट करती है। इससे हमें जीवन को

जीवन को बेहतर ढंग से जीने की कला मिलती है शिक्षा हमारे विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है हमें संसार में सही की पहचान भी शिक्षा की द्वारा ही होती है, वही बाहरी जगत में सभी के सामने अपने आप को कैसे समायोजित करना है यह भी शिक्षा के द्वारा ही पता चलता है। व्यावसायीकता की इस अंधी दौड़ में शिक्षा - रूपी व्यवसाय तो जरूर चल - फूल रहा है, पर शिक्षा का मूल उद्देश्य समाप्त होता जा रहा है। आज के समय में नैतिक मूल्य, व्यवहार का कोई मूल्य नही रह गया है। पर यह एक विडंबना है कि कल के भविष्य का वर्तमान इसी रूप में देखने को मिल रहा है।

गुण

I. शिक्षा का उत्पादकता से संबंध — शिक्षा का व्यावसायीकरण

उपयुक्त कौशलों के विकास द्वारा कृषि एंव औद्योगिक उत्पादन में आत्मनिर्भरता जैसे सामाजिक लक्ष्य में सहायक है।

* श्रम का महत्व - सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति श्रमपूर्ण कार्यों को निम्न समझता है व्यावसायिक शिक्षा उसे श्रम के महत्व से अवगत कराती है।

* रोजगार के अवसर - व्यावसायिक शिक्षा से व्यक्ति के रोजगार-प्राप्ति की सम्भावनायें बढ़ जाती है। और जैसा हम चाहते वैसा रोजगार न मिलने की स्थिति में वह खुद का व्यवसाय करने में भी सक्षम होता है।

* लोगो को आजीविका के लिए तैयार करना - इस शिक्षा से व्यक्ति की क्षमताओं का विकास होता है। जो उन्हें देश के विकास में मदद करती है।

* देश के भौतिक संसाधनो का अधिकतम उपयोग:- तकनीकी ज्ञान की कमी हमारे संसाधनो का कुशलतम उपयोग न हो पाने का एक प्रमुख कारण है। यह शिक्षा इसकी कमी को पूरा करती है।

33.

वुड्स डिस्पैच :-

सन् 1854 में वुड्स डिस्पैच शिक्षा के व्यावसायीकरण की दिशा में अंग्रेजी सरकार का एक कदम था। इसमें माध्यमिक स्तर पर छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रस्ताव रखा गया परन्तु यह सफल नहीं हुआ। मुख्य बल इस बात पर था कि माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालयी शिक्षा का आधार है इसलिए माध्यमिक स्तर पर बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा दी जाये ताकि वे अपने भावी जीवन को सफल बना सके

हण्टर कमीशन (1882)

हण्टर कमीशन ने यह प्रस्ताव रखा कि उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठशालाओं में शिक्षा दो प्रकार की होनी चाहिए।

* ऐसी शिक्षा प्रणाली जो छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करे।
* शिक्षा की वह प्रणाली जो छात्रों को विभिन्न व्यवसाय अपनाने के योग्य बनाये।

परन्तु यह योजना भी अधिक सफल नहीं रही क्योंकि दोनो प्रकार की शिक्षा प्रणालियों में छात्रों के परिवेश के अनुपात में काफी अन्तर था। अधिकतर छात्र प्रथम प्रकार की शिक्षा में ही रुचि लेते थे।

मुदालियर आयोग - (1952-53)

इस आयोग का गठन 1952-53 में किया गया इस आयोग की सिफारिशों के अनुसार माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन कर निम्नलिखित परिवर्तन किए गए —

I. माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा दोनों स्तरों पर शिक्षा का एक-एक वर्ष बढ़ा दिया गया।

* वर्तमान पाठ्यक्रम में संशोधन किए गए।
* बहुउद्देश्यीय पाठशालाओं की स्थापना पर जोर दिया गया इनमें कॉमर्स, फाइन आर्ट, गृह विज्ञान एवं कृषि से जुड़े विषयों की शिक्षा शुरू की गयी।
* पाठ्यक्रम में परिवर्तन किए गए।

वुड्स डिस्पैच :-

सन् 1854 में वुड्स डिस्पैच शिक्षा के व्यावसायीकरण की दिशा में अंग्रेजी सरकार का एक कदम था। इसमें माध्यमिक स्तर पर छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रस्ताव रखा गया परन्तु यह सफल नहीं हुआ। मुख्य बल इस बात पर था कि माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालयी शिक्षा का आधार है इसलिए माध्यमिक स्तर पर बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा दी जाये ताकि वे अपने भावी जीवन को सफल बना सके

हण्टर कमीशन (1882)

हण्टर कमीशन ने यह प्रस्ताव रखा कि उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठशालाओं में शिक्षा दो प्रकार की होनी चाहिए।

* ऐसी शिक्षा प्रणाली जो छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करे।
* शिक्षा की वह प्रणाली जो छात्रों को विभिन्न व्यवसाय अपनाने के योग्य बनाये।

कोठारी आयोग –

इस आयोग का गठन 1964-66 में दौलतसिंह कोठारी की अध्यक्षता में किया गया। इस आयोग की सिफारिश के अनुरूप देश में पहली बार वर्तमान शिक्षा संरचना को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया गया।

* 10+2+3 की नई शिक्षा प्रणाली लागू की जाये।
* सामान्य शिक्षा कम से कम दस वर्ष की हो
* +2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा दी जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986

व्यावसायिक शिक्षा को दृढ़ता प्रदान करने व कार्यक्रमों के योजना हेतु 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 1985 के कार्यदल की सिफारिशों को कार्यक्रम दिया गया। 1986 की शिक्षा नीति में जो कमियाँ रह गई थी उनको दूर करने के लिए 1992 की शिक्षा की नीति को तैयार किया गया 1986 की शिक्षा की नीतियों की कमी को दूर करने का प्रयास किया गया।

36.

राममूर्ति आयोग —

इस आयोग का गठन 1990 में किया गया। इसकी सिफारिशें राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कार्य प्रणाली पर आधारित थी। इसमें व्यावसायिक शिक्षा में छात्रों को अधिक से अधिक क्रियाकलाप करवाने पर जोर दिया गया जिससे वे अपने विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सके। सामान्य शिक्षा भी रोजगार प्रदान करने में सक्षम होनी चाहिए।

निष्कर्ष —

उपयुक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए अनेक आयोग बनाए गए तथा शिक्षा नीति में परिवर्तन करके उसमें सुधार के प्रयास किए गए।

31.

Knowledge and Pedagogy or Teaching methods (शिक्षण विधियाँ)

शिक्षण की परिभाषाएँ :-

I. Dictionary of Psychological and Psychoanalytical Terms – इस शब्दकोष के अनुसार दूसरे को सीखने में मदद करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं।

"The art of Assisting another to learn Providing of Information and of appropriate situations, conditions or activities designed to facilitate learning;"

* The Little oxford Dictionary के अनुसार – "ज्ञान प्रदान करना कौशल का विकास करना, उन्हें उत्साहित करना शिक्षण का अर्थ है।"

1. शिक्षण की प्रकृति तथा विशेषताएँ (CHARACTERISTICS AND NATURE)

I. शिक्षण अधिगम की क्रिया को प्रभावशाली तथा व्यवस्थित बनाता है।

* शिक्षण की समस्त प्रक्रियाओं का आधार मनोविज्ञान है।

* शिक्षण के दो प्रमुख अंग हैं (1) सीखने वाला (2) सिखाने वाला

* शिक्षण का कार्य ज्ञान प्रदान करना है।

* शिक्षण मार्गदर्शन करता है।
* शिक्षण छात्रों में उत्सुकता जाग्रत करता है।
* शिक्षण कला एवं विज्ञान दोनो ही है।

उपयुक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यमो से छात्रों के व्यवहारों में हम चाहे जैसा परिवर्तन कर सकते है। इन क्रियाओं के बाद शिक्षण और सिखाने वाली परिस्थितियो में संबंध स्थापित हो जाता है।

शिक्षण की प्रकृति तथा तत्व

ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है। इसमें में सभी क्रियाएँ तथा प्रयास आ जाते है जो सीखने में मदद करते है।

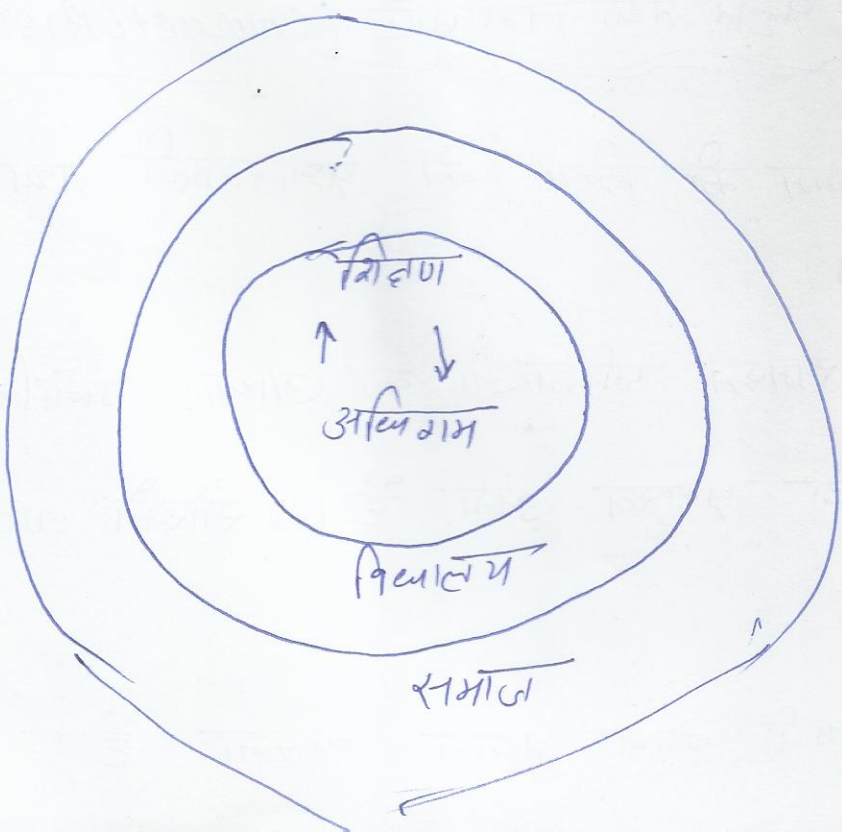

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही शिक्षण ने एक व्यवसाय के रूप में जन्म लिया। मानव सभ्यता के विकास के साथ साथ शिक्षण की प्रक्रिया भी जटिल होती गई। पहले का शिक्षण व्यवसाय VOCATION से आज PROFESSION बन गया है

शिव के मित्रा के अनुसार –

शिक्षण के स्पष्ट समझने के लिए यह चित्र व्यापी लोकप्रिय हुआ। शिक्षण अनुदेशन तथा अधिगम आपस में संबंधित प्रत्यय हैं।

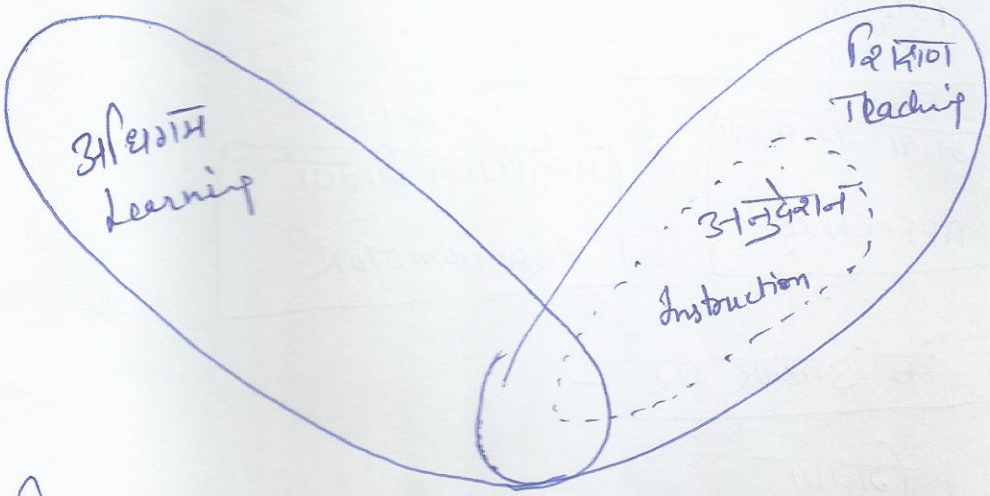

चित्र – शिक्षण, अनुदेशन तथा अधिगम में संबंध

गेन 1964 – ने शिक्षण की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए 'Teaching Topology का निर्माण किया है। गेन के द्वारा दी गयी 'टोपोलोजी' को प्रदर्शित करता है

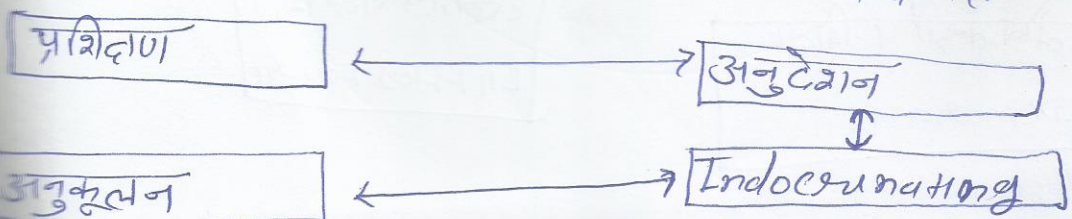

उपयुक्त चित्र से स्पष्ट है कि ग्रीन की शिक्षण प्रक्रिया में चार विशिष्ट स्तर है - (1) अनुकूलन (Conditioning) (2) प्रशिक्षण (3) अनुदेशन तथा (4) Indoctrunating इन चारों में अन्तर स्पष्ट नहीं है। ग्रीन का कथन है कि "शिक्षण के स्वरूप को समझने के लिए शिक्षण के इन तत्वों को समझना अति उपयोगी है"

TYPES OF TEACHING (शिक्षण के प्रकार)

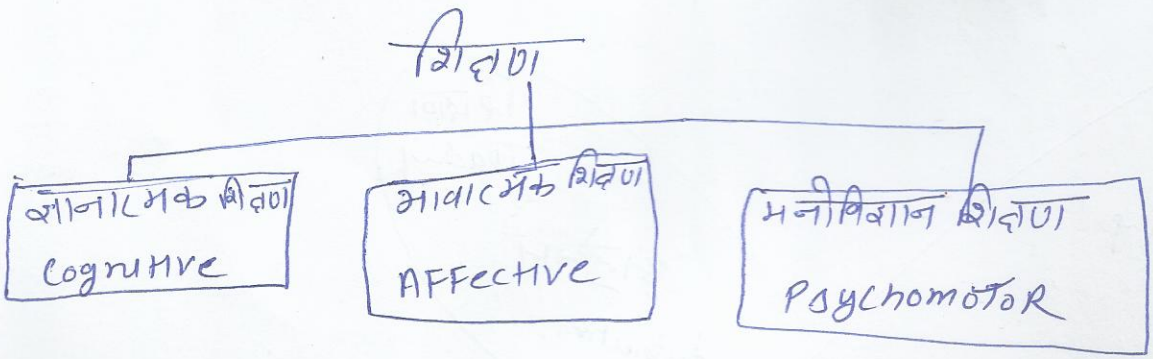

(अ) शिक्षण के स्तरों के आधार पर -

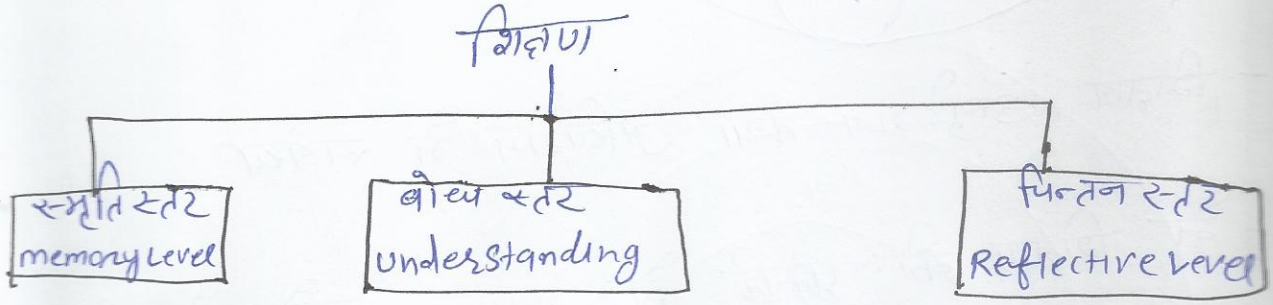

शासन प्रणाली के आधार पर -

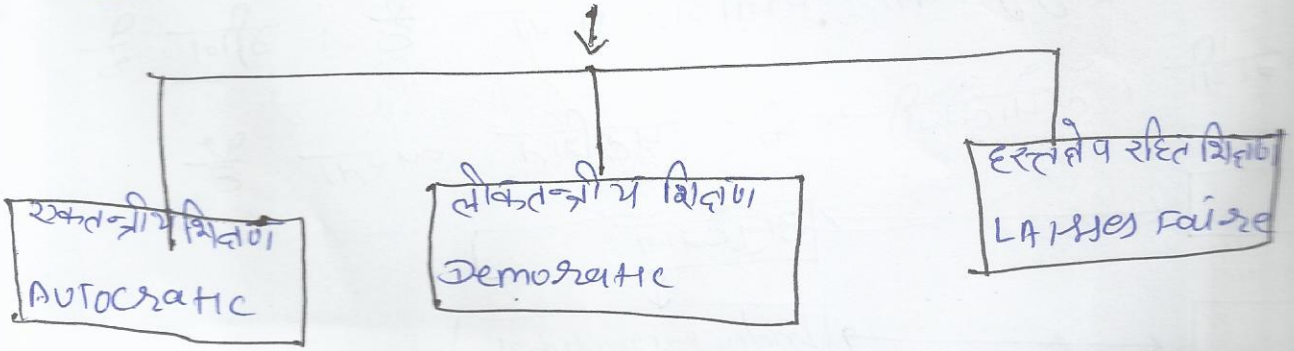

41. शिक्षण के स्वरूप के आधार पर :-

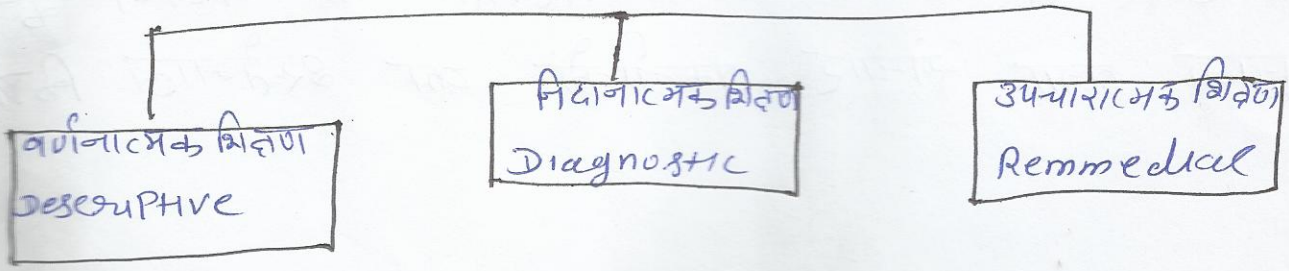

शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर —

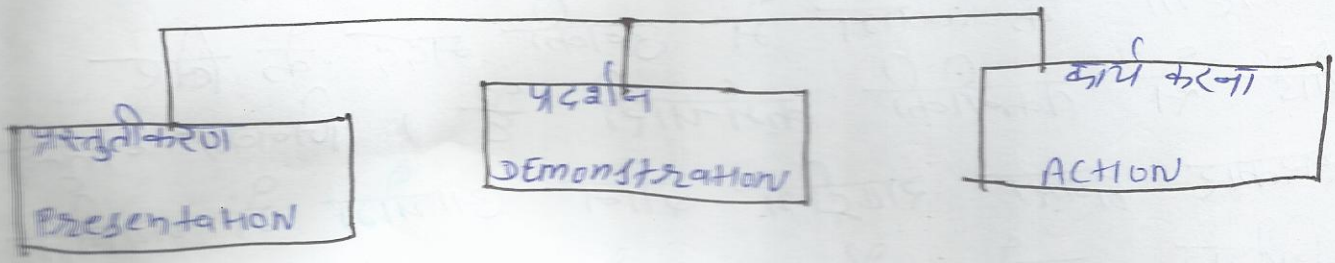

शैक्षिक व्यवस्था के आधार पर —

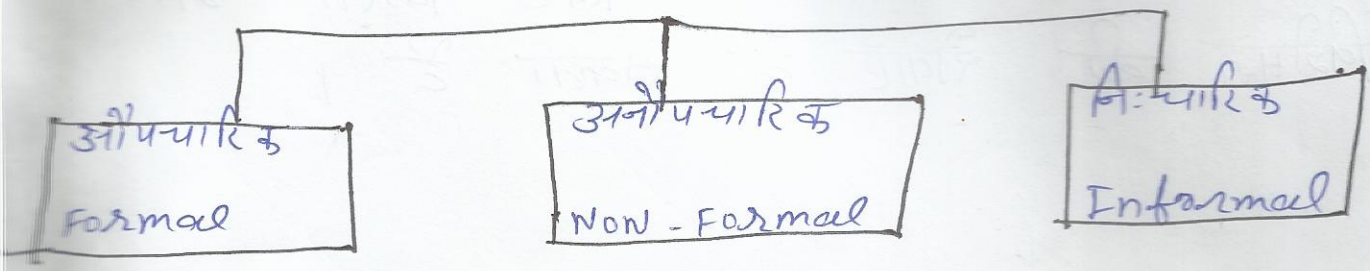

(PURPOSES) उद्देश्य

* शिक्षा व्यवस्था को मिले देश के भीतर अनुसन्धान और अभिनव प्रयासो को बढ़ावा मिले तथा स्वास्थ्य, खेती व उद्योग जैसे क्षेत्रों में इस ज्ञान का आसानी से प्रयोग किया जा सके।

* दुनिया भर में ज्ञान प्रणालियों के बीच सम्पर्क और आदान - प्रदान का तन्त्र स्थापित हो सके।

* प्रशासन और सम्पर्क यानि कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए सूचना तथा संचार तकनीकों का इस्तेमाल किया जाए।

निष्कर्ष –

सदस्यों के काम में उनकी मदद के लिए थोड़े से तकनीकी कर्मचारी हैं। जिनका नेतृत्व सरकार द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग में चयनित निदेशक करते हैं। आयोग अपने कामों के प्रबंध में सहायता के लिए किसी भी विशेषज्ञ की सेवाएँ ले सकता है।

पाठ्य-पुस्तकें TEXT-BOOKS)

पाठ्य पुस्तकें विषय सामग्री का नियमित संग्रह होती है। जिन्हें विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। यह नई धारणाओं तथा कौशलों का विकास करती है। तथा प्राप्त ज्ञान को बनाकर रखती है तथा सैद्धान्तिक ज्ञान का जीवन के व्यावहारिक पक्ष के साथ सह सबंध स्थापित करने मे सहायता करती है।

बेकन - "कक्षा मे प्रयोग के लिए विशेषज्ञों द्वारा ध्यानपूर्वक तैयार की गई तथा शिक्षण युक्तियों से सम्पन्न पुस्तक"

आवश्यकता तथा महत्व

1. पाठ्यपुस्तक प्रकाशितरूप में सहायक अध्यापक है।
2. पाठ्यपुस्तक का फ्रेम कार्य निर्मित होता है।
3. पाठ्यपुस्तक एक स्व शिक्षण युक्ति है।
4. पाठ्यपुस्तक समाज के परिवर्तन में सहायता करती है

* पाठ्यपुस्तक निश्चित जानकारी देती है।

विशेषताएँ

दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(क) अकादमिक (Academic)

① विषय सामग्री का चुनाव
* विषय सामग्री का संगठन
* विषय सामग्री का प्रस्तुतीकरण
५. मौखिक सम्प्रेषण (भाषा)

(ख) भौतिक (Physical)

* प्रकाशन
* मजबूती
* मूल्य

निष्कर्ष

उपयुक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि पाठ्यपुस्तके समाज के परिवर्तन में सहायता करती है